Bihar Board Class 11th Hindi Book Notes गद्य Chapter 5 चलचित्र

चलचित्र लेखक परिचय सत्यजित राय (1921-1992)

भारतीय सिनेम जगत् के शिखर पुरुष एवं विश्व सिनेमा के महान निर्देशकों के बीच एक दुर्लभ विभूति सत्यजित राय का जन्म सन् 1921 ई० में पश्चिम बंगाल (100 गड़पार रोड, दक्षिणी कोलकाता) के एक कलाप्रेमी एवं विद्याव्यसनी प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। उनके पिता सुकुमार राय बंगाल के एक प्रतिभाशाली लेखक थे और उनकी माँ सुप्रभा राय भी एक असाधारण गायिका थीं। इस प्रकार कला प्रेम उन्हें विरासत में मिला था। सत्यजित राय का बचपन ननिहाल 'भवानीपुर' में बीता तथा उनकी प्रारंभिक शिक्षा भी वहीं हुई। 1936 ई० में बालीगंज गवर्नमेंट हाई स्कूल से मैट्रिक एवं प्रेसिडेंसी कॉलेज, कोलकाता से स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण कर वे शांति निकेतन पहुंचे, जहाँ रवीन्द्रनाथ टैगोर के संसर्ग में उन्होंने ललितकलाओं की शिक्षा पाई। यहीं पर उनका अनेक कलाविदों से संपर्क हुआ तथा 'ग्राफिक डिजाइन' में उनकी अभिरुचि विकसित हुई।

1943 ई० में शांति निकेतन से वापस आकर सत्यजित राय ने एक
'ब्रिटिश एडवर्टाइजिंग एजेंसी में 'विजुअलाइजर' की नौकरी कर ली।
नौकरी के सिलसिले में लंदन प्रवास में उन्होंने संसार की अनेक महान
फिल्में देखीं और उनके समक्ष सिनेकला की उज्जवल संभावनाएँ उद्घाटित हुईं। वैसे कोलकाता में ही 1949 ई० में विश्वविख्यात फ्रांसीसी सिने निर्देशक ज्याँ रेनुआ से उनका संपर्क हुआ, जिनकी प्रेरणा और प्रोत्साहन से वे फिल्म-निर्माण की दिशा में अग्रसर हुए थे। लंदन प्रवास के दौरान ही उन्होंने इटली के वित्तोरियो डिसिका की फिल्म 'बाइसिकल थीफ' देखी, जिसने उन्हें 'पथेर पांचाली' बनाने के लिए उत्प्रेरित किया। यह फिल्म घोरि आर्थिक संकटों के बीच तीन वर्षों में बनकर तैयार हुई, जिसमें बंगाल सरकार से भी उन्हें थोड़ी-बहुत, मदद मिली थी। इस फिल्म में वस्तुत: बंगाल के ग्रामीण जीवन की विस्मयजनक वास्तविकता मूर्त हो उठी। इस फिल्म को 'कान फिल्म महोत्सव' में 'उत्कृष्ट मानवीय दस्तावेज' कहकर विशेष रूप से पुरस्कृत किया गया। 'पथेर पांचाली' के बाद अपराजितो' और 'अपुर संसार मिलकर अपूत्रयी का निर्माण करती हैं, जो उनकी विश्वप्रसिद्धि का कारण बनीं।

जलसाघर, देवी, तीन कन्या, अभिजन, कंचनजंघा आदि फिल्मों ने भी श्री राय को स्थायी प्रतिष्ठा दिलाने में सहायक रही। 'चारुलता' ने तो दुबारा उन्हें सिने शिल्प के संसार में महानता देकर प्रतिष्ठित कर दिया। 1978 में बर्लिन फिल्म महोत्सव में वे तब-तक के तीन महानतम फिल्मकारों में परिगणित हुए। अपनी इन सब अन्यतम उपलब्धियों के कारण सत्यजित राय ने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त किये। भारत ने उन्हें 'भारत रत्न' से सम्मानित किया तो विश्वस्तर पर विश्व सिनेमा के सर्वश्रेष्ठ सम्मान 'आस्कर पुस्कार' से वे सम्मानित और गौरवान्वित हुए। उनका निधन 1922 ई० में हुआ।

वस्तुतः सत्यजित राय ने केवल भारतीय सिनेमा के शिखर पुरुष थे, बल्कि वे विश्व सिनेमा के महान निर्देशकों के बीच की एक दुर्लभ विभूति भी थे। उन्होंने बंगाल जैसी-सीमित क्षेत्र की भाषा में अपनी फिल्में बनाकर भी विश्वसिनेमा और गौरवास्पद स्थान बनाया। यह उनकी बहुत बड़ी उपलब्धि रही। उनकी फिल्मों ने पूरी दुनिया के सिने प्रेमियों को आकर्षित और प्रभावित किया। उनकी फिल्में मानव जाति के हर्ष-विवाद, रिश्तों, मनोवेगों,

संघर्षों, द्वंद्वों आदि के बारे में एक सीमित समाज के माध्यम से उसकी सामयिक यथार्थता पर पर्याप्त प्रकाश डालती हैं। उनके संबंध में महान् फिल्मकार जापान के अकीरा कुरासावा ने ठीक ही कहा है कि "सत्यजित राय की फिल्में न देखने का मतलब है दुनिया में रहते हुए सूर्य या चंद्रमा को न देखना।"

सत्यजित राय के द्वारा रचित साहित्य, जिसमें कथा, पटकथा, निबंध, आत्मकथा, संस्मरण आदि हैं, बंगाल और अंग्रेजी में प्रकाशित है। इनका हिन्दी सहित अन्य अनेक भाषाओं में भी निरंतर भाषांतर हो रहा है। उनकी प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं फिल्में (बंगला)-पथेर पांचाली, अपराजितो, जलसाघर, अपुर संसार, कंचनजंघा, महानगर, चारुलता, नायक, गोपी गायन बाधाबायन, अरण्येर दिन-रात्रि, प्रतिद्वंद्वी, सीमाबद्धो, जनअरण्य, घरे-बाहि रे, आगंतुक आदि।

हिन्दी-शतरंज के खिलाड़ी, सद्गति।

साहित्य (हिन्दी अनुवाद)-प्रो० शंकु के कारनामे, जहाँगीर की स्वर्णमुद्रा, कुछ कहानियाँ, कुछ और कहानियाँ (कथा साहित्य) चलचित्र : कल और आज (निबंध) आदि जो राजपाल प्रकाशन से प्रकाशित है। इस निबंध में विनिर्दिष्ट तथ्यों को पुष्टि में 'पथेर पांचाली' फिल्म को उद्धृत किया गया है।

चलचित्र पाठ का सारांश

चलचित्र विभिन्न शिल्पों के योग से निर्मित मात्र चित्र ही नहीं, वाङ्मय चित्र भी है जिसकी मर्यादा उसके चित्रत्व में विद्यमान रहती है, किन्तु इसमें अर्थ प्रमुख होता है। चलचित्र का स्वरूप शिल्प की बजाय उसकी भाषा से अपेक्षाकृत अधिक स्पष्ट होता है। यह भाषा चलचित्र में बिम्ब और शब्द यानी 'साउंड' से बनती है। फिल्म के निर्माण में जिस कथा का आधार ग्रहण किया जाता है उसके कथ्य का सशक्त होना अत्यावश्यक होता है। यह कथ्य चलचित्र में चित्रों के मिलने से पूर्णता प्राप्त करता है क्योंकि अर्थ बहन चित्र की करते हैं।

ध्वनि और बिम्ब अन्योन्याश्रित होते हैं जिनके अभाव में चलचित्र की न तो कल्पना संभव है और न बिना आँख-कान को सजग रखे चलचित्र की भाषा ही समझी जा सकती है।

चलचित्र का निर्माण-कार्य जिन तीन पर्यायों में विभक्त माना गया है, वे हैं सिनेरेओ, (चलचित्र नाट्य रचना), लोकेशन या सेट्स विभिन्न परिवेश के चरित्रों द्वारा अभिनव तथा विभिन्न खंडों में की गई शूटिंग की एडिटिंग। परदे पर बिंब और ध्वनि के माध्यम से की गई अभिव्यक्ति का लिखित संकेत चलचित्र को सजीवता प्रदान करने में अवलंबन-स्वरूप ग्रहणीय होता है। चूंकि चलचित्र यंत्र युग की देन है इसलिए इसकी भाषा भी यंत्र युग की ही है। इस भाषा से ध्वनि भाषा का संयोग आज के सवाक् युग में शब्द यंत्र के आविष्कार के कारण ही संभव हो सका है।

शब्द यंत्र ही शूटिंग में कैमरे के सहारे फिल्मों को उभारते में सहायक होते हैं। इस कार्य में प्रयोग होनेवाले यंत्रों में मूविओला का प्रयोग फिल्मों के अनावश्यक अंशों को अलग करने में सहयोग करता है। इसके पश्चात् सम्पादक की यह जिम्मेदारी होती है कि वह फिल्म सीमेंट यानी गोंद से आवश्यक अंशों को जोड़ दे तत्पश्चात् सम्पन्न होता है पार्श्व संगीत का कार्य। यंत्रों का कार्य प्रायः यहीं तक सीमित होता है।

किसी भी फिल्म में दिखाये जाने वाले विभिन्न दृष्टिकोण अलग-अलग
जितने खंडों में विभक्त होते हैं वे खंड 'शॉट्स' कहलाते हैं जिसका
अपना एक शिल्पगत महत्त्व होता है, उद्देश्य होते हैं ॐ होती है उसकी
भाषागत सार्थकता। वस्तुतः यह चलचित्र की एक निजी रीति के रूप में मान्य है है जिसके उद्देश्य और सार्थकता

https://www.evidyarthi.in/

को स्पष्ट करने के लिए उन शॉट्स का विश्लेषण अंश-विशेष को उद्धृत कर ही किया जाता है। चलचित्रों में रीति-परिवर्तन निर्देशक के व्यक्तित्व के अनुसार ही होता है, यथा-पाठ में पथेर पांचाली फिल्म के एक दृश्य को लेकर की गयी आलोचना विभूतिभूषण बंधोपाध्याय के आये वर्णन से स्पष्ट है।

चलचित्र की रचना में प्रयोग होनेवाले लाँग शॉट, कट, डिजॉल्व, क्लोजअप, टिल्ट अप, मिड शॉट, पैनिंग, टू-शॉट, एक्शन आदि शब्द उसके स्वाभाविक नियम के अन्तर्गत आते हैं। ध्यातव्य है कि शॉट्स में तारतम्य भाव की एकात्मकता के लिए अत्यंत अनिवार्य है। पूर्ण विराम स्वरूप प्रयोग होने वाला 'फेडआउट' शॉट के अंत में आता है जहाँ बिम्ब और ध्वनि प्रायः लुप्त हो जाते हैं। पुनः नए बिम्ब और परिच्छेद की शुरूआत कुछ देर तक अंधकार छाये रहने के बाद होती प्रस्तुत निबंध में लेखक द्वारा चलचित्र के स्वरूप एवं उसके महत्त्वपूर्ण तत्त्वों का सम्यक् रूप से विवेचन किया गया है। विभूतिभूषण बंधोपाध्याय लिखित 'पंथेर पांचाली' उपन्यास के अंश-विशेष को लेकर फिल्म-कला और तकनीक को लेखक द्वारा अत्यंत बारीकी से स्पष्ट किया गया है।

चलचित्र कठिन शब्दों का अर्थ

बहस-मुबाहसे-वाद-विवाद। शिल्प-कलाकृति। गुंजाइश-संभावना। वाङ्मय-शब्द और अर्थ से युक्त, साहित्य। परिपूरक-अच्छी तरह से पूर्ण करने वाला। संलाप-बातचीत। निरपेक्ष-तटस्थ। पर्याय-समानार्थी। फलक-पटल, विस्तार। समवेत-एक साथ, इकट्ठा। सवाक-बोला हुआ। निर्वाक-मूक। खामखयाली-निरा काल्पनिक। उद्दाम वेग-तेज गति। सावयव-सांगोपांग। अवहेलना-उपेक्षा। रंगकर्मी-नाट्यकर्मी, नाटक करने वाला। वैचित्र्य-निरालापन, न्यारापन, विचित्रता। हैरत-अचरज। स्वगत-मन ही मन, अपने आप। मुखातिब-सामने, अभिमुख। ओसारा-बरामदा। निरूत्तर-उत्तरविहीन। उद्विग्न-अशान्त, बेचैन। नेपथ्य-पर्दे के पीछे, दृश्य के पीछे। विकृत-बिगड़ा हुआ। हतप्रभ-भौंचक्का। व्यवधान-बाधा। प्रसारता-फैलाव। संकोचन-सिकुड़ाव। दुर्दिन-बुरा दिन। अभिव्यक्ति-व्यक्त करना। बँसवारी-बाँसों की बाड़ी। सहिष्णुता-सहनशीलता। घनीभूत-सघन। अति वाहित-तेज गति से बहने वाला। परिच्छेद-अध्याय, बिलगाव। वीभत्स-घृणास्पद, घिनौना। परिहार-दूर करना। शोकदग्ध-शोक की आग में झुलसा हुआ। यथेष्ट-जितना चाहिए उतना। विलंबित-प्रदीर्घ, लम्बा, ठहरा हुआ। त्रासद-पीड़ादायक। अधीर-धैर्यहीन, चंचल।

महत्त्वपूर्ण पंक्तियों की सासंग व्याख्या

प्रश्न 1.
चलचित्र पूर्णतया यंत्र युग की भाषा है? यह बात बेझिझक कही जा सकती है कि कैमरा नामक यंत्र का यदि आविष्कार नहीं हुआ होता तो इस भाषा का सृजन ही नहीं हो पाता।
उत्तर-
प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रसिद्ध फिल्मकार और निर्देशक सत्यजीत राय द्वारा लिखित चलचित्र नामक निबंध से ली गयी हैं। इन पंक्तियों से यह स्पष्ट होता है कि चलचित्र पूर्ण रूप से यांत्रिक समय की भाषा मानी जाती है, क्योंकि फिल्म बनाने के लिए शूटिंग करते समय कैमरा नामक यंत्र का होना बहुत आवश्यक है। बिना कैमरा के दृश्यों की शूटिंग नहीं हो सकती है। फिल्म बनाने के सिलसिले में विभिन्न दृश्यों के लिए शूटिंग किए जाते हैं। विभिन्न शॉट लिए जाते हैं। यह सभी काम कैमरा के माध्यम से किया जाता है। दृश्यों को कैमरा में चित्रित किया जाता है। अतः शूटिंग के लिए कैमरा का होना अनिवार्य है।

प्रश्न 2.
चलचित्र नाट्य फिल्म का झलक है। बिंब और ध्वनि के माध्यम से परदे पर जो व्यक्त होता है, वह उसका लिखित संकेत हे।
व्याख्या-

प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रसिद्ध फिल्मकार, निर्माता और निर्देशक सत्यजीत राय द्वारा लिखित चलचित्र नामक पाठ से ली गयी है। इन पंक्तियों में लेखक ने यह बतलाया है कि चलचित्र नाट्य फिल्म का फलक है। नाट्य फिल्म के अन्तर्गत चलचित्र का विशिष्ट स्थान है। साथ ही बिंब और ध्वनि के माध्यम से परदे पर जो व्यक्त किया जाता है, चलचित्र उसका लिखित संकेत माना जाता है। चलचित्र में निर्देशक के निर्देश पर कलाकार काम करते हैं और चलचित्र को सजीव बनाते हैं। वास्तव में, इसीलिए यह कहा जाता है कि चलचित्र नाट्य फिल्म का फलक है।

https://www.evidyarthi.in/